4/1/1966 मंगलवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है.....

ओमशांति। शिवबाबा बैठ करके बच्चों को समझाते हैं। निराकार शिवबाबा बैठ करके निराकारी बच्चों को समझाते हैं। पहले–2 ये..कहते हैं कि बच्चों, देही–अभिमानी भव। अपन को आत्मा समझो और बाप को याद करो। बाबा इस समय में बच्चों को बताते हैं कि अभी तुम देही–अभिमानी बनो कि हम आत्माएँ हैं और बाप हमको पढ़ाते हैं। बाबा ने बच्चों को समझाया है कि सब कुछ संस्कार, पढ़ाई का भी, आत्मा में रहता है। इसलिए बाप आकर बार–2 समझाते हैं ; क्योंकि इस समय में जब माया का राज्य होता है, रावण का राज्य होता है अथवा भक्तिमार्ग शुरू होता है, तो मनुष्य देह–अभिमानी बन जाते हैं। फिर जब भक्तिमार्ग पूरा हो जाता है तो बाप आते हैं और आ करके बच्चों को कहते हैं कि अभी देही–अभिमानी भव। ये जो भी तुमने जप,तप,दान,पुण्य वगैरह किए, ये जो पाँच विकार भी तुम्हारे में प्रवेश किए तो तुम देह–अभिमानी बन पड़े हो। गोया ये पाँच विकार रूपी रावण आ करके तुम बच्चों को देह–अभिमानी बनाते हैं। वास्तव में तुम देही–अभिमानी थे; क्योंकि ये प्रैक्टिस तुमको यहाँ कराई जा रही है कि बच्चे, अभी अपन को आत्मा समझो और ये समझो कि बरोबर ये शरीर छोड़ करके फिर हमको नया शरीर लेना पड़ेगा। सतयुग–त्रेता में पाँच विकार रूपी माया नहीं है। तभी देवी–देवताएँ, जिनको श्रेष्ठाचारी पावन कहा जाता है, वो सदैव आत्म–अभिमानी बनते हैं; क्योंकि इस समय में बाप आ करके तुमको आत्म–अभिमानी बनते(बनाते) हैं। फिर ये 21 जन्म के लिए अविनाशी हो जाता है; क्योंकि तुम जानते हो कि वहाँ एक तो माया नहीं है, फिर ये पाँच विकार भी नहीं हैं और देही–अभिमानी भी हैं; क्योंकि वो जानते हैं कि हम आत्मा हैं। ये शरीर छोटा लिया है, बड़ा होगा, छोड़ेंगे, फिर दूसरा लेंगे। तो आत्म–अभिमानी हुए ना। तो देखो, आत्म–अभिमानी बनने से ही तुम बच्चे 21 जन्म सुखी होते हो और फिर जब रावण–राज्य आता है तो तुम बदल करके देह–अभिमानी बन जाते हो। उसको कहा जाता है सोल कॉन्शस। उसको कहा जाता है बॉडी कॉन्शस। जब निराकारी दुनिया में हो फिर ये सवाल नहीं उठता है। बॉडी कॉन्शस या सोल कॉन्शस का सवाल वहाँ उठता ही नहीं है; क्योंकि वहाँ तो है ही साइलेन्स वर्ल्ड। ये इस समय वाले संस्कार कोई वहाँ नहीं रहते हैं। इस समय में संगमयुग पर तुम बच्चों को पलटाया जाता है। देह–अभिमानी से देही–अभिमानी बनाते हैं। तो फिर सतयुग में तुम देही–अभिमानी होने के कारण दुःख कोई नहीं उठाते। एक तो माया भी नहीं है, दूसरा उनको ये नॉलेज है कि हम आत्मा हैं और यहाँ हम देह हैं, ऐसे हो जाता है। बाप आकर बच्चों को समझाते हैं कि अभी देह–अभिमान छोड़ो। देही–अभिमानी बनो तो मेरी याद से तुम्हारा विकर्म विनाश होगा। फिर देखो वहाँ तुम विकर्माजीत बन जाते हो। वहाँ राज्य भी करते हो। शरीर भी है। तो भी तुम आत्माभिमानी होने कारण ये जो शिक्षा मिलती है...ये जो कहते हैं आत्म–अभिमानी भव और फिर जो ये शिक्षा मिलती है, जिस शिक्षा से तुम वहाँ आत्माभिमानी बन जाते हो, तो फिर सदैव सुखी भी रहते हो। देखो, देह–अभिमान कहा ही जाता है बॉडी कॉन्शस (को)। वहाँ यह प्रश्न–सवाल उठता ही नहीं है। सोल कॉन्शस से ही तो तुम्हारा विकर्म विनाश होने का है; इसलिए बाप बार–2 समझाते हैं कि मुझे याद करते रहो ; क्योंकि ये जो अभी स्नान के लिए भी समझाया जाता है कि भई, पतित–पावन...। यही आकर कहते हैं कि आत्म–अभिमानी बन और मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। देह–अभिमानी बन तुम जाते हो पानी में स्नान करने.. वहाँ योगाग्नि तो हुई नहीं। ये पतित–पावन तो है नहीं। ये जो तुम स्नान करते हो अभी कुम्भ का मेला...; क्योंकि ऐसे–2 समय जब आता है, तुम बच्चों को उनको समझाने की सर्विस करने का चान्स मिलता है। जैसा–2 समय है ऐसे–2 उनको सर्विस मिले तो वो समझें। अभी तुम समझते हो कि कितने स्नान करते होंगे। सभी जो भी भाषाएँ हैं, मद्रास की तरफ जाओ, फलाने की तरफ जाओ, कहाँ भी जाओ, गुजराती हो, फलाने हो, तो अभी उनको हम कैसे... एक–2 तो नहीं समझा सकते हैं ना; इसलिए बाबा बच्चों को कहते रहते हैं कि ये जो कुम्भ का मेला है खास, उसमें ज़रूर स्नान करते हैं। सभी जगह में करते हैं। ऐसे नहीं है कि भारत के 40 करोड़ आदमी कोई एक जगह इकट्ठे हो सकते हैं। मनाते हैं ज़रूर। कोई सागर पर जाते हैं, कोई नदियों पर जाते हैं। तो देखो, कितने कागज–पत्रे

छपाने हैं। बुद्धि कितनी काम करनी चाहिए सर्विस की कि इनको हम समझावें। भले छोटा पर्चा ही हो। चलो त्रिमूर्ति न भी डालें, अच्छा छोटा ही पर्चा। उनमें सिर्फ समझाना कि बहनों–भाइयों ! थोड़ा विचार करो कि पतित–पावन ज्ञान सागर से निकली हुई ज्ञान–गंगाएँ द्वारा पावन बन सकते हो या पानी के सागर से निकली हुई पानी की नदियाँ, जिसमें सदैव स्नान करते आए हो, उनसे कोई पतित–पावन हो सकता है ? अगर इस पहेली को हल किया कि पतित–पावन को कहते हैं, तो एक सेकेण्ड में तुम 21 जन्म जीवनमुक्ति पाय सकते हो, राजभाग पाय सकते हो, वर्सा पाय सकते हो। अभी अक्षर तो थोड़े हैं ना। तो देखो, बाबा सबको समझाते रहते हैं कि जास्ती नहीं हो। तो हरेक अपने–2 सेन्टर पर बहुत छपावे ; क्योंकि नदियाँ जहाँ हों वहाँ ही तो है ना। कोई जगह में नदियाँ न भी होंगी, कहाँ तो कहाँ जाते होंगे, थोड़ा दूर भी जाते होंगे। देखो, स्नान करने कहाँ से कहाँ जाते हैं। अब...ये नदियाँ निकलती तो बहुत दूर से हैं। ये क्यों रखा है कि बस इन्हीं नदियों में स्नान करने से, त्रिवेणी पर या इलाहाबाद पर तभी पतित–पावन होंगे?.. नदियाँ तो वही हैं जो पहाड़ों से निकलती हैं। नदी माना नदी, स्नान माना स्नान।.....एक जगह में खास जा करके स्नान... इतना खर्चा करके, ट्रेन की इतनी तकलीफ ले करके ? अच्छा, स्नान भी तो उनमें ज़रूर करते हैं। ऐसे तो कोई नहीं है कि खास एक दिन है जिसमें सब आदमी स्नान करके पावन हो जाएँगे। ऐसे भी तो नहीं हो सकता है; क्योंकि यही नदियाँ हैं जिनमें जन्म–जन्मांतर स्नान करते आते हैं। अरे, सतयुग में देवताएँ भी स्नान करते थे। देखो, जमुना नदी में ये कृष्ण की भी लीला होती थी। दिखलाते हैं बरोबर। यह पानी कोई पतित–पावन है, सवाल ही नहीं उठता है। तो देखो, ये भक्तिमार्ग की, दुर्गति मार्ग की रसम है। अच्छा, यहाँ क्यों आते हैं...? नदी में तो कहाँ भी स्नान करें ! तो देखो, सभी तो नहीं आएँगे ना। सभी कोई तो गंगा में कहाँ... जो भी नदियाँ (हैं), वहाँ स्नान करेंगे। बहुत नदियाँ हैं, अथाह नदियाँ हैं, उसमें जाकर स्नान करेंगे। भला नदी माना नदी, पानी माना पानी, निकलता है सागर से और पहाड़ों से, फिर कहाँ भी स्नान करो, स्नान करना है ना ! नाम ही रहता है स्नान करने से। अभी स्नान तो मनुष्य सदैव करते हैं। देवता स्नान नहीं करते होंगे ? वो भी नदियों में स्नान करते होंगे, पानी में स्नान करते होंगे। पानी से कोई पतित बने ये सवाल ही नहीं उठता है। न मनुष्य कोई पानी में जा करके स्नान करने से पावन हो सकते हैं ; क्योंकि सतयुग में तो पावन ही हैं। वहाँ तो ये सवाल ही नहीं उठता है। ये सवाल होता है भक्तिमार्ग में, दुर्गति मार्ग में, जबकि मनुष्य की तमोप्रधान बुद्धि हो जाती है। बाप बैठकर समझाते हैं ऐसी तमोप्रधान बुद्धि हो जाती है कि ये भी समझ में नहीं आता है। देखो, बड़े–2 विद्वान–आचार्य... जो हैं, इनको भी बुद्धि में नहीं बैठता है कि पानी में स्नान करने से पावन दुनिया कैसे बन सकती है। ये तो हो ही नहीं सकती है। दुनिया तो पावन ही थी और वही नदियाँ हैं, कोई दूसरी चीज़ तो नहीं है ना। इससे सिद्ध होता है। अभी बुद्धि मिली है ना। आगे तो बुद्धि नहीं थी। अभी तो बाप ने बुद्धि का ताला.. खोल दिया है। कोई को अच्छी तरह से समझ में आता है, कोई सुना और कुछ नहीं समझते हैं, जैसे कोई झुंझारी बुद्धि होती है ना जो समझ में नहीं आता है। नहीं तो ये तो बहुत बड़ी समझ की बात है कि ये बिचारे क्या करते हैं। आगे भले हम भी थे, हम लोगों की भी तो पत्थर बुद्धि थी ना। अभी बाप बैठ करके समझाते हैं– बच्चे, इन बिचारों को देखो, ठण्डी में जा करके स्नान करते हैं। भला ठण्डी में स्नान करने क्यों जाते हैं? भई गरम में जावे! इतनी मेहनत, इतनी तकलीफ! देखो, वहाँ कितनी तकलीफ होती है! तो क्यों करते हैं ? उनको ऐसे समझाना पड़े ना। जिसकी भी ब्लाइण्ड फेथ है उनको तो रास्ता बताना चाहिए ना। ये है अंधों की लाठी बनना। इस समय के मनुष्य देखो, अंधे की औलाद अंधे इसको कहा जाता है। कुछ भी समझ नहीं है। तो उनको सुजाग करना चाहिए कि अरे भई, पानी में स्नान करने से और ही दुर्गति होती है और अगर तुमको पावन बनना है तो ये तो एक ही बार, एक ही दफा बनाते हैं। देखो, सतयुग में होते ही हैं पावन, कलहयुग में हैं ही पतित। तो कलहयुगी इण्ड हो तभी तो पावन बनना पड़े, पतित–पावन आवे। ये नदियाँ तो सदैव हैं ही हैं। अभी क्या हो गया है नदियों को? नदियाँ तो सदैव एकरस ही रहती हैं। तो करना क्या चाहिए ! देखो, ये चिंतन रहता है ना। मनुष्यों की बुद्धि जो तमोप्रधान हो गई है

और मुफ्त बिचारे दुःखी होते हैं तो दुखियों को रास्ता बताना अपना धर्म है। फिर कोई न कोई अपने धर्म वाले तो कुछ न कुछ समझ जाएँगे। तो सभी भाषाओं में, पीछे टुकड़ी ही सही। भले हर एक सेन्टर में 25 हजार, 30 हजार, बड़े सेन्टर में लाख,दो,तीन– ये चिटकियाँ छपाने में तो कोई हर्जा नहीं है ना। अच्छा, ये कहें कि भला कौन छपावे? फिर प्रश्न उठता है कि कौन छपावे ? चलो भई, गवर्मेन्ट छपाती है। दिल्ली में छपेंगे, यहाँ तो नहीं छपेंगे ना और दिल्ली में से यहाँ–वहाँ जाते भी हैं। भई, कुम्भ के मेले पर भी डायरेक्शन मिलते हैं– जाओ बाँटो। तो ये लाखों यानी जिनकी बुद्धि में ज्ञान का वो नशा है ना, उनको तो नशा चढ़ेगा। तो देखो, दिल्ली वालों को ही डायरेक्शन देते हैं। हो सकता है इलाहाबाद वालों के पास बिचारों के पास इतने पैसे न भी हों खर्चा करने का, तो इतना कहाँ से खर्च करें ! तो देखो, दिल्ली में छप रहे हैं और बाबा ने लिख दिया है, तुम वहाँ छपाकर वहाँ भेजो; परन्तु ये तो बड़े–2 बैठकर के छपते हैं। बाबा कहते हैं– नहीं, छोटे भी छपाओ जो सबको मिले। सिर्फ इसमें यही, भले चित्र भी न हो। छोटा बाकी क्या छपेगा ! मेरे ध्यान में पाई भी मुश्किल खाएगा। लाख,दो,तीन छपाय देना और बहुत भाषाओं में। हिन्दी में, अंग्रेजी में भी, उर्दू में, गुजराती में। देखो, सबको मिलते हैं ना, हैं तो सभी ना। देखो, बैंगलोर वाले हैं, वहाँ की भाषा कन्नड़िया या फलाना है। महाराष्ट्र की राष्ट्रीय भाषा है। सबमें ये छोटे पर्चे ही छपाओ, जहाँ भी छप सकें। जहाँ–2 जो–2 किस्म के बहुत आदमी हैं वहाँ उस–2 भाषा में छपाकर देना है; क्योंकि वहाँ से मराठी में छपा करके कोई दिल्ली में नहीं भेज देने का है, मराठी में छपा करके कोई लखनऊ नहीं भेज देते हैं; क्योंकि वहाँ मराठी बहुत हैं। पुणे में बहुत हैं। तो वहाँ उसमें छपा करके थोड़ा ही, जैसे बाप ने समझाया कि भाई, ज़रा विचार तो करो कि पतित–पावन ज्ञान सागर से निकली हुई ज्ञान–गंगाएँ, जिनसे एक ही बार पतित से पावन हो पावन दुनिया में जाना है वा ये पानी की नदियाँ जिसमें सदैव स्नान करते हैं या उसमें कोई पावन हो सकते हैं ? बस, बात तो थोड़ी है। नीचे अपनी एड्रेस डाल दी। पिछाड़ी में आ करके समझो (कि) सेकेण्ड में जीवनमुक्ति कैसे मिलती है और पिछाड़ी में थोड़ी एड्रेसेस डाल देना मुख्य–2 सेन्टरों की। बस, अगर ये छोटे पत्रे भी छपा करके बाँट देवें, वो भी अच्छे। अच्छा, पीछे पढ़े, न पढ़े। ये तो समझाया गया है कि ये सभी जो स्नान करने वाले हैं, समझते हैं कि पानी से स्नान होंगे, ये हैं सभी बंदर बुद्धि; क्योंकि इनको गाया हुआ है बंदर बुद्धि; क्योंकि जिसमें समझ नहीं है उसको बंदरबुद्धि...। तो देखो, तुम उनको समझा रहे हो– अरे भई, ये कहाँ तक तकलीफ करते रहते हैं ! तो बिचारा आ करके समझे (कि) कैसे ? और उनको समझाया जाता है कि ज्ञान गंगा में स्नान करने से एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति या पावन बन सकते हो 21 जन्म के लिए। वो भी लिख सकते हैं कि 21 जन्म के लिए पावन बन सकते हैं। तो ये बना करके यहीं...। अभी ये बनाने में कोई सहज है, ऐसे नहीं है कि सभी ब्रह्माकुमारियाँ कोई बुद्धू हैं। बॉम्बे में भी अच्छे–2 महारथी हैं। ये तो आपे ही समझ करके, आपस में मिल करके, विचार–सागर–मंथन करके, बना करके और खूब बाँटना चाहिए। भले क्या होगा, दो/तीन हज़ार का सभी के हिसाब में आएगा तो कागज खर्चा होगा, छपाई खर्च होगी। अभी इसमें और कोई जास्ती खर्चा नहीं है। तो इत्तला कर देवें। पीछे जब भी भले ढेर के ढेर छपे रखे हुए हों, कोई हर्जा नहीं है। स्नान तो करते ही रहते हैं। एकादशी हुई स्नान, सूर्यग्रहण हुआ स्नान, चंद्रग्रहण स्नान, फलाना स्नान। स्नान तो इनका चला ही आता है ना। वो तो देखो मेले लगे ही पड़े हैं। जहाँ–2 गंगाओं में जाओ, वो पण्डे लोग बैठे ही हैं। अभी उन पण्डों की तो दरकार नहीं है ना। क्यों बैठते हैं ? स्नान करना है (तो) जा करके स्नान करके फिर चले आओ। फिर वो पण्डा तिलक देंगे, पैसा देंगे, ये करेंगे। पानी के ऊपर वो एक धंधा निकाल कर बैठे हुए हैं। देखो, पानी के ऊपर स्नान करने के लिए भी धंधे। भई, स्नान करेगा, कुछ पैसा मिलेगा। ऐसे बहुत हज़ारों–लाखों की आजीविका होती है। सिर्फ नदी पर जाकर स्नान करने से, वो उनको तिलक लगाएँगे, चंदन लगाएँगे, कोई न कोई पत्थर–ठिक्कर की मूर्ति रखी होगी उनको हाथ जोड़ेंगे, वहाँ भी ये कुछ न कुछ रखेंगे। देखो, भक्तिमार्ग का कितना है। नहीं तो वास्तव में है तो एक सेकेण्ड की बात। तो तुम लिखते हो– भई, एक सेकेण्ड में 21 जन्म जीवनमुक्ति अब पाय सकते हो। नीचे लिखा

हुआ है ब्रह्माकुमारियाँ। अच्छा, कोई सिर्फ चिटकियाँ निकाले, कोई त्रिमूर्ति का चित्र भी लगा देवे; क्योंकि सभी सेन्टर में त्रिमूर्ति के चित्र का ब्लॉक ज़रूर होना चाहिए; क्योंकि जबकि त्रिमूर्ति से ही भारत स्वर्ग बन रहा है। है ना। शिव द्वारा, शिव से ब्रह्मा द्वारा जीवनमुक्ति। देखो, अक्षर कितना अच्छा है ! फिर भी ये तो समझना चाहिए कि ब्रह्मा सो भी तो यही है। ब्रह्मा द्वारा मुक्ति हो करके ब्रह्मा भी तो विनाश हो जाएँगे। तो जो ब्रह्मा द्वारा स्थापना हो रही है, ये भी बुद्धि चलती है ना कि ब्रह्मा द्वारा स्थापना हो, ब्रह्मा की(भी) विनाश पा जाएँगे। कोई बैठे तो नहीं रहेंगे ना; क्योंकि यहाँ प्रजापिता है ना, मनुष्य है ना। वो भी तो दिखलाते हैं कि बुड्ढा है। तो समझाना चाहिए कि इन द्वारा स्थापना हो और फिर ये भी विनाश हो जाएँगे। तो विचार करना चाहिए कि कितना समय ये जीता रहेगा। चित्र तो देखो बुड्ढे का लगा हुआ है ना, कोई जवान का तो नहीं लगा हुआ है। तो ये बुद्धि से समझाना चाहिए ना। जो कुछ न कुछ सेन्सीबुल होगा समझे(गा) कि इन द्वारा जिनकी स्थापना होती है, तो स्थापना हो जाएगी फिर ये भी तो खतम होगा। उनके पहले स्थापना ज़रूर होनी चाहिए, जो फिर शंकर से विनाश भी हो जाए। लिखा तो हुआ है ना और दिन–प्रतिदिन मनुष्य समझते जाएँगे कि बरोबर विनाश तो सामने खड़ा ही है। ये झंझट, झगड़ा की तो वृद्धि होती ही रहेगी। देखो, झगड़ा वृद्धि का होता है ना। जब कोई भी जगह में झंझट होती है, मिल्कियत के ऊपर में भी, तो चलते–2 झंझट सहन नहीं होती है तो एक/दो में मारामारी कर देते हैं। ये होता है, बहुत झगड़े होते हैं। फिर एक/दो को समझाय–2, चलते–2 आखरीन में एक/दो में लड़ मरते हैं, विनाश कर जाते हैं। ये भी ऐसे ही तो है ना कि विनाश तो सामने है ही है। जो अच्छी तरह से भागवत या गीता वगैरह पढ़ने वाले होंगे वो तो समझेंगे ना– ये विनाश तो कल्प पहले भी हुआ था यानी कुछ समय आगे हुआ था। ये लड़ाई कोई जास्ती नहीं है, ये महाभारत की लड़ाई तो बिल्कुल ही नज़दीक में हुई है। कोई लाखों बरस नहीं हुए हैं। तो बच्चों को चाहिए सर्विस। ...अभी ये पत्रे जो एग्ज़िबिशन होता है उनमें भी छपाएँगे; क्योंकि ये कुम्भ के (मेले) नज़दीक में ही आने वाले हैं। पत्रे छपे हुए हैं। अभी छपते तो हैं, उनमें ये पहेलियाँ...। उन समझू को भी अच्छी तरह से समझाना चाहिए कि ये क्या लिखा हुआ है, थोड़ा पढ़ूं। देखो, ये ठीक है ना (कि) स्नान करने से कोई पतित–पावन बनेगा या योग से पतित–पावन... ? भगवानुवाच– मेरे को याद करने से तुम्हारा विकर्म सब विनाश हो जाएगा और तुम पावन हो जाएंगे या गंगा–जमुना में स्नान करते आए हैं जन्म–जन्मांतर ? जहाँ भी दुकान हैं, तुम बच्चों के एग्ज़िबिशन हैं, कहाँ भी हैं तो मौके–2 पर भाषण। अभी जैसे इन्होंने वहाँ मौके पर निकाले हैं, बहुत भीड़ है; परन्तु बहुत मुश्किल कोई समझेगा। तो इसलिए ये छपा करके भेज देवें। तकलीफ भी कितना करेंगे। ढेर के ढेर आते हैं, वहाँ बड़ी भीड़ होती है और फिर बाँटने के लिए भी बहुत चाहिएगा, जो समझा भी सकें। ऐसे तो नहीं है सिर्फ पत्रा। फिर भी पत्रा भी ऐसे कोई से दे करके किसको रोज़ रुपया... सो भी पत्रा बाँटते हैं या न बाँटते हैं वो भी मुश्किल है; पर ऐसी जगह में खड़ा होना चाहिए जो...पत्रा वो देता जावे। कोई एडवर्टाइज़ तो कुछ है नहीं। आजकल पत्रे भी बहुत देते हैं ना– दुकानदार वगैरह। तो फिर ये भी किसी न किसको दे देना चाहिए, तो किसकी आँख चले; क्योंकि ये हैं तो रत्न ना। ये जो कुछ भी तुम कागज–टुकड़ी में लिखकर देते हो, ये जैसे कि तुम हीरे,मोती,जवाहर के रत्न देते हो; परन्तु बाप ने समझाया ना कि इस समय में सब बंदर बुद्धि हैं। वो समझते कुछ भी नहीं हैं बिल्कुल ही। बड़े–2 विद्वान,आचार्य,पण्डित कोई भी नहीं समझते हैं, झट गुर्र–2 करने लग पड़ते हैं। अभी भक्तिमार्ग की गुर्र–2 है ना। भक्तिमार्ग के अंदाज़ बहुत हैं, तुम बहुत थोड़े हो। बाबा बोलते हैं कि सर्विस का शौक रखना चाहिए हर प्रकार का। अपनी बादशाही स्थापन करते हो ना यानी रिक्रूट्स बनाते हो। अपनी बादशाही के लिए तुम जैसे कि ये रिक्रूट बनाते हो ; क्योंकि ये है ईश्वरीय मिशन। क्या करना ? मनुष्य को देवता बनाने या पतित को पावन बनाने की मिशन। ये लिख भी सकते हो कि ये है पतित को पावन बनाने की मिशन। इसमें क्या समझाया जाता है ? सिर्फ समझाया जाता है मन्मनाभव अर्थात् बेहद के बाप को, जो पतित–पावन है, उनको याद करो, तो तुम्हारा विकर्म विनाश हो जाएगा। ये समझाया तो बहुत है। ये यात्रा

की बात भी बार–2 समझाई जाती है। बाप भी बार–2 मन्मनाभव–मद्याजीभव कहते हैं ना। बार–2 कहना ही पड़ता है। मंत्र भी बार–2 जपना पड़ता है ना। तो यह भी बाबा युक्ति बता देते हैं कि बाप को बार–2 याद करो, सिमरो। वो गायन है ना, तो अभी के लिए है– सिमरो, सिमर–2 सुख पाओ। भई कलह–क्लेश मिटे सब तन के अर्थात् एवर हेल्दी बन जाओ। अर्थ तो ठीक है ना। देखो, जैसे मंत्र हो गया ना । बाप ने आ करके मंत्र दिया है कि मुझे याद करो, मुझे याद करो, मुझे सिमरो। याद करो, सिमरण को बोलते हैं कि नाम नहीं लो; क्योंकि सन्मुख समझाते हैं ना। सिमरो का अर्थ यह नहीं है कि बैठकर शिव–2 करो। भले शिव के बहुत भगत हैं, ये ऐसे शिव–2 की माला जपते हैं, कोई नए नहीं जपते हैं। जब माला उठाते हैं तो वास्तव में है ही रुद्रमाला। रुद्र माना ही शिव। तो माला भी अगर जपनी है तो भी शिव–2 करके वो माला जपनी है; क्योंकि हैं सभी शिव और सालिग्राम। और तो उनमें हैं नहीं। ऊपर में शिव है, बाकी हैं सालिग्राम। दाने हैं ना। तो दाना माना ही आत्माएँ। छोटे–2 दाने हुए ना। बाबा कहते हैं ना– आत्मा इतनी छोटी बिन्दी है। छोटी चीज़ की भी माला तो बनती है ना। देखो, जो वैष्णव होते हैं, वो गले में माला डालते हैं। बहुत छोटे दाने भी होते हैं। काले–2 दाने की भी माला बहुत पहनते हैं। वास्तव में लॉ मुजीब तो एक को सिमरन ....। माला है ही रुद्र की बनी हुई। रुद्राक्ष, शिव की माला बनी...। तो ज़रूर बैठकर भला माला भी जपनी चाहिए तो शिव–2। अभी शिव–2 कौन कहते हैं ? वो तो आत्माएँ हैं, उनको तो शिव को याद करना है। शिव–2 क्यों करें ! तो देखो, तुमको समझाया जाता है शिव–2 भी बोलना नहीं है। तुम आत्मा हो और अपने बाप को याद करना है। सिर्फ शिव–2 करने से बुद्धि का योग कहाँ जाए ? वो तो माला में जाकर पड़ता है या तो ये बड़े चित्र में जाकर पड़ता है; परन्तु उनका अर्थ तो कोई को (मालूम) नहीं है कि शिव–2 करने से क्या होगा। वो ये नहीं जानते हैं कि बैठ करके शिव–2 जपने से हमारा विकर्म विनाश होगा। ये उनको बुद्धि में नहीं रहता है। ये अगर किसको भी पड़े तो फिर माला की दरकार नहीं है। जैसे अभी बाबा कहते हैं– बच्चे, उठते–बैठते शिव को याद करो। क्यों ? तुम्हारा क्या होगा ? तुम्हारा विकर्म सब विनाश हो जाएगा। माला फेरने वाले के पास ये ज्ञान है नहीं, तो वो विकर्म विनाश होगा। किसके भी पास ये ज्ञान है नहीं। होने का नहीं है; क्योंकि विकर्म विनाश होता ही है संगमयुग पर डायरेक्ट शिवबाबा की मत से। बिगर शिवबाबा के मत से, बिगर संगम के समय कितना भी कोई बैठकर शिव के पास.... देखो, मंदिर में जाकर बैठते रहते हैं ना, तो अभी ऐसे ही शिवकाशी–2... पीछे पिछाड़ी में विश्वनाथ गंगा। वहाँ गंगा है ना। बरोबर ज्ञान गंगा होनी चाहिए। जाकर बैठते हैं फिर भी पानी पर, गंगा के ऊपर। नहीं तो वहाँ शिव के मंदिर में जाकर जपते हैं– शिवकाशी–3। अभी वो समझते हैं शायद काशी में शिव का प्रभाव है। नहीं, शिव के मंदिर तो बहुत ही जगह में बने हुए हैं, बड़े–2 आलिशान अच्छे–2 मंदिर। ये भक्तिमार्ग के हैं ना। अभी ऐसे नहीं समझना कि यहाँ स्नान नहीं करेंगे। यहाँ भी आकर स्नान करेंगे मंदिर के सामने। तुम देख लेना कितने ढेर आते हैं। तो चलो पत्रिका होगी तो वहाँ भी जा करके देंगे। यहाँ से भी जाना चाहिए ना कि भई, जाकर दो/चार को दो। वाकिफ़ तो है ही अच्छी तरह से। अगर वाकिफ़ न हो तो... जा करके जो स्नान करने वाले सुबह को आते हैं सबको चिट्टी हिन्दी में दे देना कि जा करके इनको समझना। अरे बोल देना– इनको जा करके पढ़ना और समझना। पीछे फेंकते हों या कुछ भी करें। ले तो जावें, पढ़ें तो सही। पुरुषों की भी बुद्धि में तो आवे; क्योंकि माताएँ तो बिचारी बहुत बुद्धू हैं। इन बातों को बड़ी मुश्किल समझती हैं।....पण्डित लोग तो समझेंगे ना। पण्डित लोगों को भी हाथ में देना चाहिए, तिलक लगा करके, लंगोट चढ़ा करके। तो उनको भी जाकर देना है, समझाना है, जो स्नान कराते हैं, तिलक देते हैं कि भई, पतित–पावन तो परमात्मा है। वो तो एक ही बार आकर पतित को, सारी दुनिया को, पावन बनाते हैं। ..

.यह तो हम करते ही आए हैं। ये तो पानी है। पानी से कोई पतित थोड़े ही पावन होते हैं। ज्ञान से होते हैं ज़रूर। तो कैसे पावन बनते हैं ? वो तो योग रखने से। अगर कोई समझना चाहे तो उनको समझा देना चाहिए कि बाप कहते हैं मैं पतित–पावन हूँ, मेरे साथ योग लगाने से तुम पावन बन सकते हो। तो देखो, हम ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ अब स्नान नहीं करते हैं, हम ज्ञान स्नान करती हैं पतित–पावन से। ज्ञान गंगा चाहिए। तो वो तो चैतन्य मनुष्य चाहिए, कुछ आ करके समझो। उनको बाँटना चाहिए, कोई हर्जा थोड़े ही है। एक दिन पहले ही बाँट देना चाहिए। यहाँ भी कुछ करना तो पड़ेगा ना। एक दिन करना पड़ेगा। ये सभी जो चित्र, ये कागज निकलते हैं वो जा करके ये जो भी बनिये लोग या फलाना हैं, इनकी दुकान में छोड़ करके आना चाहिए। फिर भी आते–जाते तो रहते हैं ना। कुछ न कुछ वाकिफ़ तो हैं ना। यहाँ भी थोड़ी–बहुत सर्विस होगी वो ठीक है। ये जो पत्रे छप करके आते हैं, जो अच्छे–2 ..... चलो उनको जा करके बोलो– ये दुकान के बाहर में छप(छाप) दो तो पढ़ते रहें। देखो, इनमें कितनी अच्छी बातें हैं ! तो जा करके अच्छे–अच्छों को समझाना भी चाहिए, जो समझना चाहे ; क्योंकि अभी मनुष्यों के पास धंधा तो है नहीं। चुप करके बैठे हुए रहते हैं। तो जा करके कुछ समझाना चाहिए तो उनमें भी कुछ दान पड़े। कोई आवे तो बोले किसको कि भई, यहाँ जाना। मित्र–संबंधी तो बहुत ही आते रहते हैं। सर्विस का कोई भी प्रकार से शौक ज़रूर चाहिए। ये प्रदर्शनी आएगी तो यहाँ भी कुछ करेंगे। ऐसे नहीं कि नहीं करेंगे। यहाँ भी इन सब बातों के ऊपर समझाएँगे। यहाँ भी शुरू करेंगे। सीजन में यहाँ इस बारी अच्छी तरह से करेंगे हॉल में या फलाना; क्योंकि सारा दिन बुद्धि में यही रहता है ना। जैसे बाप आते हैं तो मुझे पतितों को पावन बनाना है। अकेला तो काम नहीं करेगा ना। तो देखो, तुम बच्चों का आधार लेते हैं। एक तो इस शरीर का भी आधार लेना पड़ता है, दूसरा तुम बच्चों का आधार लेना पड़ता है कि तुम भी जा करके इनको समझाओ। बात तो बिल्कुल सहज है। ये कागज भी ले जाओ, समझाओ। अभी बहुत अच्छी तरह से छप रहे हैं। किसको भी ले जा करके समझाना कि आकर समझो। मौत सामने खड़ा है। इतना दिन जो भक्ति की है, किसलिए भक्ति की है ? या तो मुक्ति या जीवनमुक्ति, सुख के लिए। जो कृष्ण को याद करते हो, वो क्यों ? वो तो सुखधाम में रहते हैं। ये भारत में स्वर्ग में रहते थे। अभी तो नर्क है। अभी तो नर्क के बाद स्वर्ग ज़रूर आएगा। देखो, स्वर्ग में जाने के लिए पवित्रता चाहिए। देखो, ये स्नान करते हैं। ये एक ही दफा ज्ञान स्नान करने से सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। ...सेकेण्ड में मुक्ति भी जब मिलने वाली होती है तभी एडवर्टाइज़मेंट होती है या हम लोग पर्चे छापते हैं, नगाड़े पीटते हैं जबकि मिलती है। नहीं तो इतने दिन में कभी कोई कह भी नहीं सके, ऐसे–2 पत्रे कोई छपा न सके। सजनियों को साजन आ करके शृंगारते हैं। शृंगार ही अच्छा नहीं लगता है, देखो। ... आखानियाँ भी बहुत बनी हुई हैं। एक खेरुद की बच्ची को ले आया। आगे दिखलाया उनको, न तो स्नान का, न कपड़े पहनने का... बहुत मत्था मारा, बहुत मत्था मारा ... और फिर वो चली गई खेरुद के पास। देखो, यहाँ भी ऐसे ही है ना।... कुछ न कुछ सर्विस करनी चाहिए ईश्वर अर्थ। अच्छा ! मीठे–2 सर्विसेबुल बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग।

ये प्रेस है। कागज बहुत पड़े हुए हैं। यहाँ भी छपा सकते हैं। नमूना भी छपा सकते हैं भेज देने के लिए। कोई बड़ी बात तो है नहीं। बाबा आज एक चिटकी बना करके भेज देंगे। शायद त्रिमूर्ति का ब्लॉक यहाँ होवे जो नीचे छप सके; क्योंकि बाबा तो अनुभवी नहीं है ना। अनुभवी उसको कहेंगे जो सर्विस करते होंगे...।